REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2021

'चीफ की दावत' में चित्रित जीवन मूल्य का विघटनः एक विश्लेषण

डॉ. विजयलक्ष्मी शास्त्री
सहा.प्राध्यापक–हिन्दी, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महा.अम्बिकापुर,
जिला–सरगुजा, छत्तीसगढ़.

संक्षेपिका

''साहित्य और समाज का अटूट संबंध है। साहित्य समाज में होने वाले परिवर्तन को उजागर करता है। मानव का दृष्टिकोण समय के साथ बदलता रहता है। इस बदलाव की स्थिति में जीवन मूल्य में भी परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी। भीष्म साहनी द्वारा अपनी कहानी 'चीफ की दावत' में आधुनिक जीवन में हो रहे जीवन मूल्य के विघटन को चित्रित किया गया है। आधुनिक पीढ़ी के हाथों पुरानी पीढ़ी का अनादर होते हुए कहानी 'चीफ की दावत' में दर्शाया गया है। इस कहानी में आये मूल्यगत परिवर्तन की तफ्तीश करने पर यह तथ्य सामने आता है कि वर्तमान युवा पीढ़ी के भीतर अपने माता–पिता के प्रति कोई भावनात्मक, संवेदनात्मक स्वर की अनुगूंज सुनाई नही देती' ।

प्रस्तावना–

आधुनिक परिवेश में 'मूल्य' शब्द की चर्चा प्रायः सुनी जाती है। 'मूल्य शब्द मूल यत' से निष्पन्न है। जिसका अभिप्राय है–किसी वस्तु के विनियम में दिया जाने वाला धन, दाम अथवा कीमत। संस्कृत व्याकरण के आधार पर मूल्य शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार मानी गई है। ' मूलेन समो मूल्य' अर्थात मूल के समान।[1]

आज के दौर में मूल्य शब्द का अर्थ व्यापक हो गया है। आधुनिक जीवन में मूल्य शब्द का प्रयोग संपूर्ण मानव व्यवहार के मानदंड के रूप में किया जाता है। उच्च जीवन मूल्यों के आधार पर ही परिवार और समाज टिका हुआ है। मूल्य सामाजिक जीवन की आधारशिला है। समाज में ही सभ्यता और संस्कृति का विकास होता है तथा मानव का व्यक्तित्व निर्माण भी समाज में ही होता हैं। मानव की प्रतिष्ठा समाज में उसके व्यक्तित्व के जिन गुणों से होती है उसे ही 'मूल्य' कहते है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समय परिवर्तन के साथ सामाजिक मूल्य भी बदलते है। परंतु समाज में कुछ मूल्यों का स्थायी होना भी आवश्यक है। क्योंकि इन मूल्यों का त्याग करने से समाज में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। वेनवर्ग और शेवेत का कथन हैं–

'सामाजिक परिवर्तन आधुनिक संसार के हृदय में निवास करता है। इन परिर्वतनों के परिणाम स्वरूप सामाजिक मूल्यों में भी उतनी ही तेजी से विघटन आता है।'[2]

विश्लेषण –

अगर हम जीवन मूल्यों की बात करें तो हमारे समाज में प्राचीन काल से संस्कार रूप में ही कृतज्ञता परोपकार, सत्यता, देशभक्ति, बड़ों का आदर, ममता प्रेम, त्याग, बलिदान आदि स्थायी रूप से विद्यमान है। यही

जीवन मूल्य हमें जीना सीखाते हैं। परंतु आधुनिक भौतिकवादी जीवन में हमने इन मूल्यों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। आज झूठ, भ्रष्टाचार ईर्ष्या, शोषण, दुर्व्यवहार आदि बढ़ने लगे हैं। मानवीय संवेदनाएँ तो लगभग समाप्त हो गई हैं। आज मानवीय जीवन में मूल्यों का ह्रास होता दिखाई देता है।

हमारे भारतीय समाज में परिवार का महत्व प्राचीन काल में ही स्वीकार किया गया है। हमारी संस्कृति में माता–पिता को देव तुल्य माना गया है। किंतु जीवन की व्यस्तता, भौतिकवाद और अर्थ केन्द्रित दृष्टि ने परिवार नामक संस्था को सबसे अधिक ठेस पहुचाई है। भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' में बुजुर्ग पीढ़ी की उपेक्षा का चित्रण किया गया है। माता पिता को सम्मान देना भारतीय संस्कृति के मूल में है। किंतु आज की युवा पीढ़ी भौतिकता और शीध्र आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लोभ में अपने इस कर्त्तव्य से विमुढ़ हो रही हैं। कहानी का नायक शामनाथ व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए अपना मां की उपेक्षा करता है। भारतीय समाज में मां की एक अलग महत्ता होती है। लेकिन आज पुत्र शामनाथ को अपनी तरक्की के लिए चीफ के द्वारा अपनी मां का अनादर होने देने में भी कोई हिचक नही है। शामनाथ ने घर में बॉस को दावत दी है जिसकी तैयारी में शामनाथ और उसकी पत्नी जी जान से जुटे हुए है। घर के फालतू सामान आलमारियों के पीछे और पलंग के नीचे छिपाया जाने लगा तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अडचन खड़ी' हो गई– 'मां का क्या होगा'।[3]

शामनाथ की पत्नी मां को पड़ोसी के यहाँ भेजने को कहती है। शामनाथ को लगता है कि इससे पड़ोस की 'बुढिया' का आना जाना फिर शुरू हो जायेगा। नई पीढ़ी के बेटे शामनाथ के ये शब्द वस्तुतः पुरानी पीढ़ी के प्रति उपेक्षा भाव व कर्तव्यहीनता की स्थिति स्पष्ट करते है। पुत्र कहता है कि मां से कहे कि वह जल्दी खाना खाकर अपनी कोठरी में चली जाये। परंतु श्रीमती जी को चिंता है कि वह सो गयी तो '.खर्राटे' लेने लगेगी। साथ ही तो बारमदा है जहॉ लोग खाना खायेंगे। अब दोनों पति–पत्नी निर्णय लेते हैं कि मां खाना खाकर सोयें नही बल्कि कुर्सी पर बैठी रहें। फिर भी उन्हे चिंता है कि अगर मां सो गयी तो ? ' शामनाथ खीझ उठे, हाथ झटकते हुए बोले –अच्छी भली वह भाई के पास जा रही थी'– तुमने यूं ही अच्छा बनने के लिए बीच में टांग अड़ा दी।[4] इससे यह पता चलता है कि व्यक्ति आज कितना गिर गया है। अपनी तरक्की के लिए, बॉस को खुश करने के रास्ते में मां उसे अड़ंगा लगने लगी है। वह नही चाहता की मां उसके बॉस के सामने आये। आज ममता प्रेम आदि मूल्यों का विघटन हो रहा है।

कहानी के नायक शामनाथ को लगता है कि कही मां इसकी तरक्की में आड़े न आ जाय। इसलिए वह किस तरह से कुर्सी पर बैठेगी, पैर उपर नही, नीचे रखना है, नंगे पांव नही घूमना है और न ही खड़ाउं पहनकर सामने आना है। शामनाथ 'सिगरेट' मुंह में रखे मां के कपडों के विषय में भी सोचने लगते हैं। 'शामनाथ हर बात में तरतीव चाहते थे शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ का साक्षत् मां से हो गया तो कहीं लज्जित न होना पड़े'।[5] वह मां को सफेद सलवार कमीज पहनकर दिखाने को कहते है साथ ही कहते है कि कुछ चुड़ियॉ हो तो पहन लो। मां कहती है चुड़ियॉ कहॉ से लाऊँ वह तो तुम्हे पढ़ाने–लिखाने में बिक गयी। इस पर शामनाथ भड़क जाते हैं। शामनाथ के चीफ दावत पर आते है और बरामदे में पहुँचते है। मां खर्राटे लेते हुए सो रही थीं। दोनो पांव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर इधर–उधर झूल रहा था। '' देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे जी चाहा कि मां को धक्का दे कर उठा दे और उन्हे कोठरी में धकेल दे मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे।[6] मां को देखते ही अफसरों की स्त्रियाँ हँस दी इतने में चीफ ने धीरे से कहा–'पूअर डियर' यहां पर चीफ व सभी मेहमान मां का मजाक उड़ाते है। चीफ मां से हाथ भी मिलाते हैं पर मां वृद्ध हैं उन्हे नही पता कि कौन सा हाथ मिलना हैं। वह बांया हाथ आगे कर देती है। इस पर पुत्र शामनाथ क्रोधित होते हैं। चीफ मां का हाथ पकड़े हुए हैं और उनके मुंह से शराब की बू भी आ रही हैं। वे मां को गीत गाने व नाचने को भी कहते है। इसी बीच चीफ शामनाथ की मां के हाथो बना हुआ फुलकारी देखते हैं और बनाने की फरमाईश कर देते हैं। शामनाथ की मां वृद्ध है। उन्हें ठीक से दिखाई भी नही देता हैं। परंतु शामनाथ नही चाहते कि फुलकारी न बनने के कारण उनकी तरक्की रूक जाये । वे भी मां को फुलकारी बनाने को कहते हैं। मां कोठरी में जाती है और उनकी आंखों से छल–छल ऑसू बहने लगते है। वह शामनाथ से कहती है कि उसे हरिद्वार भेज दे किंतु वह कहता है कि तुम चली जाओगी? तो फुलकारी कौन बनायेगा। तब मां कहती है कि मेरी ऑख अब नही है बेटा, तो शामनाथ कहते है– मां तुम मुझे धोखा देकर यूँ चली जाओगी, मेरा बनता काम बिगाड़ोगी ? जानती नही साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी।[7]

आज की पीढ़ी कितनी स्वार्थी हो गई हैं। पहले तो वह मां को रखना नही चाहता था। उसे लगता था कि मां के कारण उसकी तरक्की न रूक जाये परंतु अब स्वार्थवश अपनी वृद्ध मां को जाने नही देना चाहता । वह पुत्र इतना स्वार्थी है कि उसे यह भी दिखाई नही देता कि मां अब फुलकारी बनाने में सक्षम नही है। उनकी आंखे कमजोर हो चूकी हैं। आधुनिक पीढ़ी के हाथों पुरानी पीढ़ी का अनादर होते हुए भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' कहानी में दिखाया गया। इस कहानी में आये मूल्यगत परिवर्तन की तफ्तीश करने पर यह तथ्य सामने आता है कि वर्तमान युवा पीढ़ी के भीतर अपने माता पिता के प्रति कोई भवनात्मक, संवेदनात्मक स्वर की अनुगूंज सुनाई नहीं देती।

आधुनिक भौतिकवादी जीवन शैली में जीवन मूल्यों का विघटन तीव्र गति से हुआ है। पारिवारिक मूल्यों के अंतर्गत ममता, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, सहानुभूति, आत्मीयता, आदि विविध मूल्य आते है। 'चीफ की दावत' कहानी में लेखक द्वारा समाज में व्याप्त पश्चात्य प्रणाली का असर, भोगवादी दृष्टि, विलासी भौतिकवादी प्रवृत्ति, स्वार्थन्धता आदि विविध कुप्रवृत्तियों के कारण टूटते हुए पारिवारिक मूल्यों का चित्रण किया गया है।इस प्रकार आलोच्य कहानी में जीवन मूल्य के विघटन का सर्वांगीण चित्रण हुआ है। यह कहानीकार की समाज के प्रति सजगता का परिचायक है।

संदर्भ–

1. सं. सातव, डॉ. जी.पी.,स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में बदलते जीवन मूल्य, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं.–प्रथम–2015, पृष्ठ–74
2. सं. सातव, डॉ. जी.पी.,स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में बदलते जीवन मूल्य, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं.–प्रथम–2015, पृष्ठ–107
3. सं.आड़िल, डॉ.सत्यभामा, हिन्दी कथा साहित्य, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्कारण–तृतीय (2012), पृष्ठ–71
4. सं. आड़िल, डॉ.सत्यभामा, हिन्दी कथा साहित्य, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्कारण–तृतीय (2012), पृष्ठ–71
5. सं. आड़िल, डॉ.सत्यभामा, हिन्दी कथा साहित्य, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्कारण–तृतीय (2012), पृष्ठ–73
6. सं. आड़िल, डॉ.सत्यभामा, हिन्दी कथा साहित्य, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्कारण–तृतीय (2012), पृष्ठ–75
7. सं. आड़िल, डॉ.सत्यभामा, हिन्दी कथा साहित्य, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, संस्कारण–तृतीय (2012), पृष्ठ–78